राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 419

आफत की पुड़ियां

बांकेलाल

RAJ COMICS FAN NATION
RFN

BUY COMICS SAVE COMICS INDUSTRY

संजय गुप्ता पेश करते हैं–

आफत की पूड़ियां

हास्य सम्राट बांकेलाल का हास्य कॉमिक
हास्य सलाह कार : विवेक मोहन, संजय गुप्ता

चित्रांकन : बेदी
सहयोग : अमित, गौरव, अरुण मनोट
लेखक : तरुण कुमार वाही
संपादक : मनीष गुप्ता।

खुजलीगढ़! सांसपुर! चंदननगर एवं चौखंडी। विशालगढ़ ऐसे कई पड़ोसी राज्यों से घिरा है।

विशालगढ़ इनमें सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य है इसलिए जब भी किसी राज्य पर कोई संकट मंडराता है तो मदद की गुहार विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह से ही की जाती है।

इस बार ये गुहार लगाई थी खुजलीगढ़ के सेनापति ने। सेनापति की प्रार्थना पर राजा विक्रमसिंह, बांकेलाल के साथ आ पहुंचे थे खुजलीगढ़ के महल।

वैसे तो श्राद्ध के दिनों में मैं कहीं भी नहीं आता-जाता, किंतु आपकी समस्या को देखते हुए आपकी प्रार्थना पर मैं बांकेलाल को साथ लेकर आ ही गया। लेकिन ये क्या?

महाराज का सिंहासन खाली क्यों है?

महाराज हजमसिंह कहां हैं? सेनापति? ही ही ही।

और ये सिंहासन पर मकड़ी के जाले क्यों लगे हैं?

बहूहूहूहू!

मकड़ी के जाले तो महल की सभी दीवारों पर लगे हैं महाराज!

मुझे लगता है यहां इंसान कम और मकड़ियां अधिक रहती हैं। ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

ये समीजाले मकड़ियों ने नहीं...

!!

??

... बल्कि हमारे महाराज ने बुने हैं, जो कि मकड़ासुर के कारण मकड़ी बन गए हैं। वो देखिए। वो रहे हमारे महाराज हजमसिंह। बहूहूहू।

!!

!!

मकड़ा बनने के बाद इन्हें हमने जालीदार पिंजरे मे बंद कर दिया है ताकि कहीं यह पूरे महल में जाले न लगा दें। ही ही ही।

चिटर चिटर

अरे! महाराज विक्रमसिंह आप

कृपया इन्हें कहें कि मुझे पिंजरे से बाहर निकालें और जाले बनाने दें। अन्यथा मैं जाले से फांसी लगा कर अपने प्राण दे दूंगा। वुईईई। ही ही ही। बहूहूहू।

सुना है मकड़ासुर आड़ों में आता है।

आसपास के राज्यों में मकड़ासुर ने आतंक मचा रखा है महाराज!

हमारे महाराज उसके दूसरे शिकार हैं।

अगर शीघ्र ही उसे समाप्त न किया गया तो वो विशालगढ़ भी आ सकता है। आपको मकड़ा बनाने। ही ही ही।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

सेनापति बदहजमी को मदद का आश्वासन देकर विक्रम-सिंह व बांकेलाल वापस विशालगढ़ लौट पड़े।

बांकेलाल! राक्षस मकड़ासुर से सुरक्षा का उपाय महल पहुंचते ही करना होगा।

जी हां महाराज! मैं इसी विषय पर सोच रहा हूं। ही ही ही।

मैं तो सोच रहा हूं कि वो यहीं रास्ते में ही मिल जाए और मोटे मुच्छड़ को बना दे मकड़ा। ही ही ही।

कोचवान रथ को बड़ी तेजी से दौड़ाते हुए विशालगढ़ की सीमा में प्रवेश कर गया था-

बांके ध्यान से देखो शायद तुम्हें कहीं नजर आ ही जाए मकड़ासुर।

ठीक तभी-

बांकेलाल! बहुत सी गायों के रंभाने के स्वर कहां से आ रहे हैं?

बांऽऽ

बांऽऽ

दगड़ दगड़

दगड़ दगड़

वो मारा। कहीं मकड़ासुर ही तो गाय की तरह नहीं रंभा रहा। ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

खूब चिल्ला लो। लेकिन हांकासुर तुम्हें हांक कर ले जाएगा। ही ही ही।

बांऽऽ(इसने कोई मंत्र पढ़कर एक फूंक मारी थी। जिससे हमारा मस्तिष्क इस शैतान के वशीभूत हो गया है।) बहूहूहू

बांऽऽ मेरा पति अपने साथी के साथ दूसरे नगर में गया हुआ है अन्यथा इसे बता देता। बहूहूहू

बांके लाल! ये दुष्ट दैत्य तो विशालगढ़ की सारी गायें हांककर ले जा रहा है।

बिना गायों के विशालगढ़ में दूध व घी की भयंकर कमी हो जाएगी।

आप ठीक कहते हैं महाराज! जल्दी से सैनिकों को इसे रोकने या खत्म करने का आदेश दीजिए। ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

नहीं बांकेलाल! ये अकेले सैनिकों के वश का रोग नहीं है।

इस दैत्य से निबटने के लिए हमें स्वयं उसके सामने जाना होगा। ही ही ही गुईईई।

ओ कम्बख्त दैत्य! वहीं रुक जा।

बों ऽऽ गों ऽऽ बों ऽऽ

कहीं ये मकड़ासुर ही तो नहीं? ही ही ही।

सबसे पहले अपना नाम बता? ही ही ही।

हांकासुर।

ये तो हांकासुर है। बहहहह।

अब ये बता कि ये सारी गाय हांक कर कहां ले जा रहा है।

मेरे स्वामी श्री मकड़ासुर ने बताने से मना किया है कि ये सारी गाय मैं उनके ही आदेश पर कोबरा घाटी में ले जा रहा हूं। जहां पर विषैले सर्प इन्हें डस कर इनकी जीवन लीला समाप्त कर देंगे। ही ही ही।

क्या? मकड़ासुर?

हां! श्री मकड़ासुर। मगर उनका नाम इज्जत से ले मोटे अन्यथा तेरी तोंद का मटका फोड़ दूंगा। ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

क्रोध न करो राक्षस भाई। और ये बताओ कि ये सभी गाय तुम्हारे वश में कैसे आ गईं? और किसी नगरवासी ने तुम्हें गाय ले जाते देखा क्यों नहीं और देखा तो फिर रोका क्यों नहीं?

ही ही ही।

ये रहस्य मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा। कि मेरी आंखों में सम्मोहन की शक्ति है जो अट्टहास मंत्र पढ़कर फूंक मारने से सम्मोहित कर देती है। और फिर वो...

... वही करता है, जो मैं चाहता हूं। ही ही ही।

अब तुम लोग मेरा समय खराब मत करो। मुझे तुरन्त इन गायों को कोबरा घाटी ले जाना है।

ही ही ही।

मोटा बहुत चबड़-चबड़ कर रहा है। इसे भी ले जा।

ही ही ही।

ठहर जा दुष्ट दैत्य। तू इन गायों को यहां से नहीं ले जा सकता।

अगर तूने एक कदम भी और आगे बढ़ाया तो तेरा सिर भूमि पर पड़ा नजर आएगा। गुर्रर्र्र।

ये मोटा तो पागल हो गया है।

म... मगर त... तू क्यों हंस रहा है दैत्य भाई?

ही ही ही। ही ही ही। ही ही ही।

मैं हंस नहीं रहा। ही ही ही। ही ही ही ही ही ही। लेकिन मैं तुम्हें ये रहस्य नहीं बताऊंगा कि पचास बार ही ही ही करके हंसने से अट्टहास मंत्र पूरा हो जाएगा। फिर जब मैं फूंक मारूंगा तो तुम सभी सम्मोहित हो जाओगे।

फिर मैं तुम्हें भी कोबरा घाटी छोड़ आऊंगा। ही ही ही। ही ही ही। ही ही ही।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

ये कम्बख्त तो मुझे भी कोबरा घाटी ले जायेगा। बहूहूहू।

अच्छा ये मत बता कि तू कितनी बार हंस चुका है? ही ही ही।

मेरे, अलावा जो भी हंसता है उससे भी अट्टहास मंत्र पूरा होता है। दस बार मैंने ही ही ही किया और एक बार तुमने। यानी कुल मिला कर ग्यारह बार ही ही ही हो चुकी है।

ये तो दांत फाड़े ही जा रहा है। बहूहूहू

ही ही ही। ही ही ही। ही ही ही। ही ही ही।

बांकेलाल! मेरी तलवार इसकी गर्दन क्यों नहीं काट पा रही? बहूहूहू।

लगता है महाराज कि इसकी गर्दन भी उसी पदार्थ की बनी है जिससे आपकी गर्दन बनी है। ही ही ही।

ही ही ही! ही ही ही। ही ही ही। ही ही ही।

अच्छा दैत्य भाई। तुम्हारी ये हंसी रूकेगी कैसे? बहूहूहू।

ये तो मैं बिल्कुल भी नहीं बताऊंगा कि मेरी हंसी केवल छींकों के आने से ही रूक सकती है। ही ही ही। ही ही ही।

हिनन! (मेरी दुलत्ती पड़ेगी तब भी रूक जायेगी। महाराज। एक बार मुझे खोल दो।) बुईईई। ही ही ही।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

मन ही मन कोई योजना बनाता हुआ बांकेलाल बोला—

दैत्य भाई! अब तो तुम हमें कोबरा घाटी ले ही जाओगे। किंतु उससे पहले अपनी मूंछों का रहस्य तो बता दो।

ये रहस्य तो मैं बिल्कुल भी नहीं बताऊंगा। ही ही ही...

...कि एक बार मैंने ऋषि मिर्चाचार्य की मूंछे खींच दी थीं। ही ही ही।

तब उन्होंने मुझे ये शाप दिया था कि मेरी मूंछों के स्थान पर मिर्चें उगा आएंगी... ही ही ही।

...और यदि कोई इन्हें उखाड़कर एक मेरी नाक के पास लाकर तोड़ देगा तो मिर्च के प्रभाव से मुझे छींकें शुरू हो जाएंगी ही ही ही। ही ही ही।

!!

वो मारा!

...फिर यदि कोई बाकी बची मिर्चों को हरियल तोतों को खिला देगा तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे। ही ही ही। किंतु ही ही ही। किंतु ही ही ही। ये रहस्य मेरे या उस ऋषि के अलावा कोई नहीं जानता। इसलिए मेरे प्राणों को किसी से कोई खतरा नहीं। ही ही ही। और अब मेरा अट्टहास मंत्र भी पूरा होने वाला है। ही ही ही।

महाराज! अपनी तलवार से उसकी मूछें उड़ा दो।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

राजा विक्रमसिंह ने आव देखा न ताव—

हांकासुर! हुण तेरा की होऊ?

आ गई इसकी मिर्ची मूंछें हाथ में।

अरे! ये क्या? मेरी मूंछे काट दीं?

ही ही ही

सिर्फ काट ही नहीं दी। तोड़ भी दी।

कटाक

ही ही ही ... आंछू। आंछू।

आंछू! ही ही... आंछू... ही आंछू... छींको के कारण ही ही... मेरा अट्टहास मंत्र पूरा नहीं हो पा रहा। बहूहूहू। अट्टहास मंत्र में व्यवधान पड़ चुका है।

कोचवान! रथ को धीमी गति से आगे ले चलो। हमें उसका अट्टहास मंत्र पूरा होने से पहले बाकी बची मिर्चे तोतों को खिलानी हैं।

मगर तोते हमें कहां पर मिलेंगे।

विशालगढ़ के जंगल में हमें तोते न मिलें, ये तो हो ही नहीं सकता।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

आंछू... मुझे पता है तुम बाकी की मिर्चें तोतों को खिलाने के लिए तोतों की तलाश कर रहे हो लेकिन मैं तुम्हें आगे नहीं जाने दूंगा। मैं कोड़े से तुम्हारी खाल खींच लूंगा।

सड़ाक

उसने कोड़े से रथ का पहिया जकड़ लिया है जिससे रथ आगे नहीं बढ़ रहा।

रथ नहीं बढ़ सकता। मगर मैं तो बढ़ सकता हूं।

कम्बख्त सारे तोते कहां मर गए?

टैं टैं

तोतों की टैं टैं? वो मारा।

टैं टैं

तोतों की आवाजें पेड़ के पीछे से आ रही हैं। अगर मैं उधर गया तो मुझे देखकर तोते उड़ जाएंगे। मिर्चें चुपचाप पेड़ के पीछे फेंक देता हूं लेकिन पहले झांक कर तो देख लूं कि तोते हरियल भी है या नहीं।

टैं टैं

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

घबरा मत! घबरामत
मिर्चें फेंक दे। ही ही ही। ये आवाज असली हरियल तोते की ही है।
मुझे तो तोते की आवाज निकालनी आती ही नहीं। ही ही ही।
टें टें
??

बाप रे! यहां तो हांकासुर छिपा हुआ है। और तोते की आवाज निकालकर मुझे मूर्ख बनाने की चेष्टा कर रहा था। अच्छा हुआ मैंने मिर्ची फेंकने से पहले वृक्ष के पीछे झांक लिया।
ओह! उसे पता चल गया कि यहां मैं छिपा हुआ था। उसे हर बात कैसे पता चल जाती है? बहूहूहू।

बांकेलाल का भाग्य प्रबल था।
अरे! बहेलिया तोते पकड़ रहा है। उसके पिंजरे में कई हरियल तोते हैं। काम बन गया। ही ही ही।
ज्यादा टें टें मत कर। चुपचाप हाथ लग जा। ही ही ही।
टें टें
प्यारे तोतों। जल्दी से अपना मनपसंद भोजन ग्रहण करो। ही ही ही।
टें टें भैया! मिर्ची मत खाना। इसमें से नाक की बदबू आ रही है।
बांकेलाल ने आगे बढ़कर पिंजरे का द्वार खोला और सारी हरी मिर्चें पिंजरे में फेंक दीं—

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

टें टें! (नाक तो तेरी बह रही है। तू मत खा। मुझे तो बहुत भूख लगी है।) टें टें। ही ही ही।

बहूहूहू! (मैं तो सोच रहा था कि इन्हें उल्लू बना दूंगा और सारी मिर्चें खुद ही हड़प लूंगा।) बहूहूहू। टें टें।

अब तो राक्षस हांकासुर के बचने का कोई रास्ता ही नहीं बचा था।

आह!

तोते ने बोली टें। मेरी हो गई टें। बहू हूहू।

दैत्य मारा गया।

बहेलिया भैया! तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद! अगर तुम और तुम्हारे तोते मुझे दिखाई न देते और मैं उनको राक्षस की मूंछे न खिलाता तो ये दुष्ट दैत्य मेरे हाथों के तोते उड़ा जाता। बहू हूहू। ही ही ही।

राजा विक्रम सिंह भी तब तक वहां आ पहुंचे।

वाह! दैत्य मारा गया।

टें टें! क्या? इसका मतलब मैं ठीक कह रहा था। मिर्चों में से सचमुच नाक की बदबू आ रही थी।

नेंव नेंव नेंव नेंव नेंव

हां! ये तो मारा गया मगर पता नहीं मोटे तू कब मरेगा मेरे हाथों? ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

राजा विक्रमसिंह ने बहेलिया को पुरस्कार देकर वहां से विदा किया।

महाराज विक्रमसिंह की जय हो। बांकेलाल जिंदाबाद।

हैं टैं! (कमाल है। काम तो हमने इनाम वाला किया और इनाम मिला बहेलिया को।) गुर्रर्र।

तभी एक दिव्य प्रकाश वहां फैल गया और-

बांकेलाल! मैं गौदेव गऊआ हूं।

तुम्हारे कारण इतनी सारी गायों के प्राण उस दुष्ट दैत्य हांकासुर से बच गए। मैं तुम पर अति प्रसन्न हूं। ही ही ही।

मैं तुम्हें गायों की ताकत गां- बां देता हूं। जिसका प्रयोग गऊ मंत्र बोलने के बाद किसी भी संकट से बचने के लिए तुम केवल एक बार ही कर सकते हो। ही ही ही।

अब तुम मेरे पीछे-पीछे पवित्र गऊ मंत्र बोलो। उसके बाद तुम्हें मिल जाएगी गां- बा ताकत। ही ही ही।

अब बोलो गऊमंत्र!

किंतु ये शक्ति देने से पहले तुम्हें एक कांटा चुभोना जरूरी है। ही ही ही मगर घबराओ नहीं। इस कांटे के चुभने से दर्द नहीं होता। ही ही ही।

कांटा लगा। हाय लगा। झोपड़ी के पीछे तेरी खोपड़ी के नीचे, हाय रे गऊआ, रे गऊआ। कांटा लगाऽऽऽ ही ही ही।

पिंच

आह!

बांकेलाल गौदेव का अनुसरण करता चला गया।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

गौ देव की शक्ति से सारी गाय विशालगढ़ को लौट गईं।

वेंऽऽबांबांऽऽ

तत्पश्चात् कोचवान ने रथ को आगे बढ़ाया।

गाय हमारी माता है। उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। और ईश्वर का शुक्र है कि हम अपना धर्म निबाहने में सफल हुए। ही ही ही।

मगर उनकी सवारी अभी कुछ ही दूर गई होगी कि-

बांके लाल! क्या तुम भी कुत्तों के भौंकने के स्वर सुन रहे हो? ही ही ही।

मुझे तो केवल आपके (भौंकने की) आवाज ही आ रही है महाराज।

भों भों

बांकेलालजी! शब्द 'आपके' नहीं। आपकी है। उच्चारण ठीक बोलना चाहिए ये कहिए कि मुझे तो केवल आपकी आवाज ही आ रही है।

गुर्रर्र कोचवान के बच्चे! चुपचाप रथ हांक।

मैं और आगे नहीं जा सकता। बहूहूहू।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

... क्योंकि सामने से निकल रही है कुत्तों की बारात।

बांकेलाल! वो दैत्य विशालगढ़ के सारे कुत्तों को इकट्ठा करके कहां ले जा रहा है?

पहले गाय और अब कुत्ते। ये विशालगढ़ में हो क्या रहा है?

वौऊ वौऊ भौं भौंक

बांकेलाल! वो दैत्य विशालगढ़ के सभी श्वानों को इक्टठा करके ले गया तो विशालगढ़ के गली-मौहल्लों की रक्षा कौन करेगा। रात्रि-काल में चोरों का साम्राज्य बढ़ जायेगा।

विक्रमसिंह तलवार खींचकर रथ से नीचे उतर आया।

बांकेलाल! हमें इसे श्वानों को ले जाने से रोकना होगा।

विक्रमसिंह की दहाड़ सुनकर दैत्य के कदम ठिठक गए थे।

ठहर जा दुष्ट दैत्य!

कहानी 19 पेज से जारी

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

वोऊ। वोऊ

मैं केवल कुत्तों की भाषा समझता हूं। उन्हीं से बातें करता हूं और उन्हीं की बातें सुनता हूं। क्योंकि मैं हूं मौंकासुर। ही ही ही।

मौंकासुर! तो फिर महाराज से बातें करो। वो जानना चाहते हैं कि विशालगढ़ के वाली मोहल्लों के प्रहरियों को तुम कहां ले कर जा रहे हो? ही ही ही।

अगर तुम्हारे महाराज को मुझसे बातें करनी हैं तो पहले उन्हें मौंकना पड़ेगा।... क्योंकि मैं मौंक सुने बिना किसी से बात नहीं करता। ही ही ही।

तुम क्या समझते हो कि हमारे महाराज को मौंकना नहीं आता।

क्षमा करें महाराज! एक बार इसे मौंककर दिखा दें।

गुईईई मौं मौं!

मौं मौं! वोऊ वोऊ! तो फिर सुनो। मैं विशालगढ़ के रक्षा प्रहरियों को अपने स्वामी मकड़ासुर के आदेश पर बिच्छु घाटी लेकर जा रहा हूं। जहां बिच्छु इन्हें डसेंगे और मौत के घाट उतार देंगे। ही ही ही। मौं मौं वोऊ वोऊ।

वुफ वुफ! (अरे महाराज की भाषा हमें समझ में आ गई।)

(महाराज हमसे पूछ रहे हैं कि इस शैतान को मार दिया जाए या छोड़ दिया जाए।) ही ही ही।

(मार दिया जाए।) ही ही ही। मौं मौं!

मौं मौं महाराज! हमें बचाइये। पता नहीं...

...(कैसे हम इस दुष्ट का आदेश मानकर इसके साथ जाने के जादू से बंधे हैं।)

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

मौत के घाट तो तुझे मैं उतारूंगा दुष्ट शैतान!

...और ये बिल्ली नहीं बौना शेर है। तुम दोनों कहीं भी चले जाओ ये तुम्हें फाड़कर रख जाएगा। ही ही ही।

गर्रर्र! एक तो तेरी छोटी तलवार के कारण मैं बौना हो गया। ऊपर से शेर को बिल्ली कहता है।)ही ही ही।

बाप रे!

??

मगर दैत्य सुर के शरीर से टकराते ही—

अरे ये क्या? मेरी तलवार बिल्ली बन गई।

ही ही ही।

मेरे शरीर से टकराते ही कोई भी शस्त्र जानवर में बदल जाता है...

जैसे ही बौना शेर जमीन पर कूदा—

शेर पहले किस पर झपटेगा, ये तो पता नहीं। लेकिन इससे पहले कि शेर पहले मुझ पर झपट पड़े मैं मोटे को ही इस पर धकेल देता हूं। ही ही ही।

आहह!

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

आह, स्वामी! मुझे बचाओ। बहूहूहू।

अगर बौना शेर दबने से मर गया तो श्रृंगी ऋषि के श्राप के कारण मेरी गर्दन स्वयं ही कट जाएगी। मुझे इसे बचाना होगा। बहूहूहू।

हम्फ! उफ! ये तो उठ ही नहीं रहा। बहूहूहूहू।

स्वामी बचाओ। मेरा दम निकल रहा है। बहूहूहू।

बांके बेटा! अगर ये विक्रम को उठाने में कामयाब हो गया तो फिर शेर मुझ पर भी अवश्य झपटेगा। बहूहूहू।

क्यों न मोटे को उठाने में मैं इसकी मदद करूं ताकि दैत्य प्रसन्न होकर मेरे प्राण बख्श दे। हीहीहीं।

आह! मेरी पूंछ छोड़ दे।

स्वामी बचाओ।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

मारा गया मैं तो। मेरी जान मेरी पूंछ में ही है। अगर पूंछ टूट गई तो भी मैं मारा जाऊंगा और अगर शेर का दम घुट गया तो भी मैं मारा जाऊंगा। बहूहूहूहू

हम्फ! ये तो रिंच ही नहीं रहा।

ओह! सूझ गई एक तरकीब

बांकेलाल जी! अगर आपका आदेश हो तो हम मदद के लिए आगे आएं। वैसे आप तो जानते ही हैं कि हमारे आगे आने से भी कोई खास फायदा नहीं होगा। ही ही ही।

तुम वहीं रहो और घोड़ों की लगाम का एक सिरा मेरी तरफ फेंक दो। दूसरा रथ से बांध दो जल्दी करो।

बांकेलाल जी! ये लीजिए घोड़ों की लगाम।

ARJUN & MOHIT

बांकेलाल ने लगाम को राक्षस की पूंछ से कसकर बांध दिया।

इसने लगाम बांधकर मेरी पूंछ लम्बी क्यों कर दी?

रथ को दौड़ाओ जल्दी।

जो आज्ञा बांकेलालजी! मैं रथ को दौड़ाता हूं। ही ही ही।

स्वामी बचाओ।

बांकेलाल उठाओ।

मूर्ख! ये क्या कर रहा है। रथ को मेरी तरफ क्यों दौड़ा रहा है? इससे दैत्य खिचेगा कैसे?

रथ को उल्टी दिशा में दौड़ा मूर्ख ताकि राक्षस भी साथ खिंचजाए।

कोचवान ने जल्दी ही बांकेलाल की बात समझ कर रथ वापस मोड दिया।

ओह! अरे, ये तो मेरी ही मदद कर रहा है। मुझे रथ से खिंचवा रहा है। मेरे साथ-साथ ये भारी-भरकम मोटा भी खिंच जाएगा और मेरे जादुई शेर के ऊपर से हट जाएगा। फिर शेर इनको खा जाएगा। ही ही ही। मैं तो खामखाह डर गया था। ये तो मेरी मदद कर रहा है। मगर...

... बांकेलाल पूंछ से मत खींच। लगाम मेरी कमर पर बांध दे। ही ही ही।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

रथ के विपरीत दिशा में दौड़ने से टूट गई दैत्य की पूंछ।

आहह !

मैं तुझे मना कर रहा था कि पूंछ मत खींच। मेरी जान पूंछ में ही थी। बहू हू हू।

खट चाक

पूंछ टूटते ही—

अरे ! ये तो मेमना बन गया।

किंतु मेमना बनने से पूर्व दैत्य रथ और अपनी संयुक्त शक्ति से विक्रम को भी खींच कर खड़ा कर चुका था—

विक्रमसिंह के ऊपर से हटते ही बौना शेर मेमने पर झपट पड़ा।

गर्रर्र

बौना शेर पल भर में ही मेमने को हजम कर गया।

इसी के साथ वो पुनः तलवार में बदल गया।

बांकेलाल ! ये तो...

...पुनः तलवार में बदल गया।

दैत्य की मृत्यु के साथ ही उसका सारा जादू टूट गया।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

बांकेलाल! पहले जब तूने मुझे बौने शेर पर धक्का दिया तब तो मैं डर ही गया था।

किंतु बांके! मेरे लाल! तुझे कैसे पता लगा कि उसके प्राण उसकी पूंछ में हैं? ही ही ही।

पुच्ची

पता होता तो लगाम उसकी पूंछ की बजाए तेरी गर्दन पर बांधता। कम्बख्त! मनहूस मोटे मुच्छड़ कहीं के। बह्ह्ह्ह्।

तभी एक दिव्य प्रकाश वहां फैल गया और-

बांकेलाल! मैं यज्ञ देव हूं। मेरा नाम कुकरमुत्ता है। ही ही ही।

तुमने इन सैकड़ों रक्षा प्रहरियों के प्राणों की रक्षा करके मुझे प्रसन्न किया है। ही ही ही।

???

मैं तुम्हें रवान शक्ति भौं भौं काटी देता हूं। इस शक्ति का प्रयोग तुम जीवन में एक बार किसी भी संकट से निबटने के लिए कर सकते हो। ही ही ही।

!!

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

लेकिन मौं मौं काटी को इस्तेमाल करने से पूर्व कुकर-मुत्ता मंत्र बोलना मत भूल जाना। मंत्र याद कर लो।

चढ़ी जवानी, आंखें मस्तानी। हो गई मुटियार दी। पूंछ टेढ़ी थी, अब सीधी, हो गई खूंखार की। ही ही ही।

इसी के साथ पशु देव अन्तर्धान हो गए।

पशु देव के असर से सभी मौं मौं रक्षा प्रहरी भी वापस विशालगढ़ लौट गए।

फिक्!

वीऊ

मौं मौं ही ही ही

बांकेलाल! मकड़ासुर का उत्पात बढ़ता जा रहा है। ही ही ही।

उत्पात तो तुझे जीवित देखकर मेरे मस्तिष्क में बढ़ गया है मुच्छड़। गुर्रई।

कोचवान भी रथ लेकर लौट आया था। अतः बांकेलाल और विक्रमसिंह पुनः उस पर सवार होकर विशालगढ़ की ओर बढ़ चले।

मुझे तो ये भय सता रहा है कि कहीं वो दुष्ट राक्षस मेरी प्रजा का कोई अहित न कर दे। वैसे भी श्राद्ध के इन दिनों में लोग अपने पूर्वजों के दुख में दुखी...

... होते हैं। मैं उन्हें और दुखी नहीं देख सकता। कोचवान! रथ थोड़ा और तेज चलाओ। बहू हू हू।

ARJUN & MOHIT

कोचवान बेचारा क्या करता। जब आगे धूल भरी आंधी चलने से रास्ता ही न दिखाई दे तो-

अरे बांके लाल। वो देखो। ये धूल भरी आंधी इन सैंकड़ों हजारों कौओं के पंखों के फड़फड़ाने से चल रही है।

कांव कांव

कांव कांव

कांव

उड़ जा काले कांवा ऽऽऽ तेरे मुंह विच्च खण्ड पांवा ऽऽ ही ही ही।

कांव कांव

महाराज वो देखिये। सभी कौए उस दैत्य के साथ उड़कर जा रहे हैं।

एक और दैत्य?

कहीं इसे भी शैतान मकड़ासुर ने ही तो नहीं भेजा है।

राज्य के सारे कौए इसके साथ ही उड़े जा रहे हैं।

हां, मगर केवल आपको छोड़कर। मेरा मतलब महाराज कि कौओं के न रहने से हमें क्या हानि होगी?

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

बांकेलाल! प्रत्येक जीवजन्तु या पशुपक्षी को ईश्वर ने कुछ सोच-समझकर ही बनाया है...

हां! केवल आपको छोड़कर। ही ही ही।

गुर्रर्रर्र

जश सोचो! अगर ये कौए नहीं रहेंगे तो हमारी फसलें कीड़ों और टिड्डियों से कौन बचाएगा?

ये कौए ही तो उन्हें खाते हैं। फिर कौए ही तो घरों की मुंडेरों पर कांव कांव करके अतिथि के आने का संदेश देते हैं।

इन कौओं की रक्षा करना भी मेरा कर्तव्य है बांकेलाल।

बांकेलाल। तुम भी जल्दी मेरे साथ आओ।

मुच्छड़! मैं तो तेरे साथ ही हूं और तुझे चिता पर लिटाने के बाद ही तेरा साथ छोड़ूंगा। ही ही ही गुर्रर्रर्र।

कौन है तू दुष्ट राक्षस और विशालगढ़ के सारे कौओं को लेकर कहां जा रहा है?

मेरा नाम कांकासुर है। और मुझे मेरे स्वामी मकड़ासुर ने कौओं को मौत के घाट उतारने के लिए भेजा है।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

तो फिर राजा विक्रमसिंह के हाथों मरने के लिए तैयार हो जा। दुष्ट कांकासुर!

सांयऽऽऽ

तड़ाक

हा हा हा! तूने भयंकर भूलकर दी राजा विक्रमसिंह जो मुझे फेंकने वाला शस्त्र मारा। मुझे तीर भाले जैसे फेंकने वाले शस्त्रों से नहीं मारा जा सकता। मुझे पकड़ने वाले शस्त्र से ही मार सकते हैं जैसे तलवार, गंडासा...

... गदा इत्यादि। ही ही ही।

अगर कोई मुझे फेंकने वाला शस्त्र मारता है तो वो पलट कर मारने वाले की टांट पर लगता है...

खटाक

... और मेरे गुण उसमें भी स्थानांतरित हो जाने से वो भी बन जाता है कौआ। ही ही ही।

BUY COMICS SAVE COMICS INDUSTRY

और यह दृश्य देखने वाला भी कुछ देर में...

??

... बन जाता है बिलौटा। ही ही ही।

क्या? इसका मतलब मैं बिलौटा बनने वाला हूं। बिलौटा तो कौए का शत्रु होता है। फिर तो मैं मुच्छड़ को मार कर खा जाऊंगा। ही ही ही।

ये कांकांसुर तो बड़े काम का आदमी, मेरा मतलब राक्षस निकला। ही ही ही।

मगर मैं बिलौटा बन क्यों नहीं रहा?

फिं फिं फिं

ये अभी तक कौआ बना क्यों नहीं ?...

... बूहूहूहू। ये तो कौआ बन ही नहीं रहा।

मैं बिलौटा क्यों नहीं बन रहा?

!!

कारण कांकांसुर की समझ में जल्दी ही आ गया।

ओह! इसने तो उजले मोतियों की माला पहनी हुई है।

इसी कारण मेरा कागजादू इस पर नहीं चला। मोती मेरे जादू की काट है। मैं अभी इसकी माला तोड़ देता हूं। वरना तीर दोबारा अपने आप ही मुझे लग जाएगा। ही ही ही बहूहूहू।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

कांकांसुर ने अपने पंजे में फंसाकर तोड़ डालनी चाही मोतियों की माला। लेकिन-

मैं तेरे नीचे उतरने की ही प्रतीक्षा कर रहा था दुष्ट!

आह!

कांकांसुर पुनः विक्रमसिंह पर झपटा लेकिन-

न मुच्छड़ कौआ बन रहा है और न मैं बिलौटा।

और ये कांकांसुर विक्रमसिंह पर आक्रमण क्यों कर रहा है?

झाड़

आह!

तभी भूमिपर पड़ा बाण स्वयं ही उड़ा और जा लगा कांकांसुर को-

अगर मैंने शीघ्र ही इसके गले में पड़ी मोतियों की माला को नहीं तोड़ा तो गजब हो जाएगा। बहूहूहू।

तड़ाक

बाण एक बार फिर विक्रमसिंह के सिर पर आकर टकराया-

अरे! बाण अपने आप ही दोबारा कांकांसुर को जा लगा और फिर पहले की तरह ही जा गिरा मोटे की खोपड़ी पर।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

मुझे पता है कि ये मोटा ताजा इंसान अभी भी कौआ नहीं बनेगा।

मुझे शीघ्रातिशीघ्र इसके गले में पड़ी माला को तोड़ना होगा। मैंने भी किससे पंगा ले लिया। बहूहूहू

शैतान कांकांसुर! विशालगढ़ के कौओं को आजाद कर दे अन्यथा मैं तेरा जोड़-जोड़ हिला दूंगा। बुर्रर्र्र्र

धाड़

अहि!

बांकेलाल का मस्तिष्क बड़ी तीव्रता के साथ चल रहा था।

आखिर कांकांसुर बारबार मुच्छड़ के गले की तरफ क्यों झपट रहा है?

और अभी तक विक्रमसिंह कौआ बना क्यों नहीं? बाण दोबारा अपने आप ही कांकांसुर को क्यों जा लगा? इन...

... बातों में क्या रहस्य है?

मुझे लगता है कि कांकांसुर महाराज के गले में पड़ी वह मोतियों की माला झपटना चाहता है।

धाड़

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

क्यों न उसे मैं ही तोड़ दूं। ही ही ही।

तू मेरे हाथों से बचेगा नहीं गुर्रर्र्र्र।

ओह! एक बार फिर स्वयं ही वह तीर कांकासुर को लग रहा है।

आह!

तड़ाक

कांकासुर से टकराकर तीर फिर से विक्रम की खोपड़ी पर गिरा मगर इसबार भी कुछ नहीं हुआ।

होगा तब जब मोतियों की ये माला टूटेगी। ही ही ही।

बांकेलाल! ये क्या कर रहे हो?

नहीं। तीन बार तीर मुझे लग चुका है। अब मोतियों की माला को मत तोड़ना।

मोतियों की माला कावजादू की काट है इसलिए मैं बारम्बार उसे तोड़ने की चेष्टा कर रहा था।

??

धड़.

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

किंतु माला को तोड़ने की मेरी चेष्टा विफल हो गई और तीन बार तीर मुझे लग गया।

तीन बार तीर मुझे लगने और मेरे शत्रु की टांट पर गिरने और मोतियों की माला टूटने के बाद जादू का असर उल्टा हो गया।

अब मुझे कोई नहीं बचा सकता। मैं सभी कौओं को लावा घाटी में मौत के घाट उतारने ले जा रहा था।

किंतु अब मैं खुद ही मौत के घाट पहुंच गया।

हुण अप्पां दी की होऊ। चंगा भई। हुण...

...अप्पां चल दे हैंगे। आ हिच्च।

ये तो मर गया।

तो तुम्हारी नानी क्यों मर गई। ये तो प्रसन्नता की बात है।

मगर बांकेलाल! अगर तुम ठीक समय पर आकर मोतियों की माला न तोड़ देते तो ये दुष्ट कभी न मरता।

पुच्ची पारी।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

तभी एक दिव्य रौशनी वहां फैल गई और प्रकट हुए काग देवता–

प्यारे बांकेलाल! मेरा नाम है कुज-कुज कैंदा कोका। ही ही ही।

मैं पृथ्वी के समस्त कौओं का देवता हूं। ही ही ही।

आज तुम्हारे कारण सैकड़ों हजारों निर्दोष कौए मौत के मुंह में जाने से बच गए। ही ही ही।

कांव

कांव

कांव

कांव

इसीलिए मैं तुम पर प्रसन्न हूं और तुम्हें वरदान देता हूं। किंतु पहले घास का तिनका तोड़कर मेरी नाक में डालकर गुदगुदी करनी होगी। ही ही ही।

बांकेलाल! जल्दी से तिनका तोड़ो। ही ही ही।

बांके ने तिनका तोड़कर काग देवता की नाक में तिनका किया–

आंछू ही ही ही।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

जुकाम से मेरी नाक बंद हो गई थी। जो तिनका करने और छींक आने से खुल गई। ही ही ही। अब तो मैं तुम पर और भी अधिक प्रसन्न हो गया हूं। ही ही ही। मैं तुम्हें देता हूं काग शक्ति कूकी। तुम कूकी मंत्र बोलकर जीवन में एक बार इसका प्रयोग कर सकते हो। ही ही ही।

कूकी मंत्र याद कर लो

सफाई करे झाड़ू
हम स्वास आड़ू। झाड़ झौंके
झाड़ू तुम भी खाओ आड़ू।
ही ही ही।

किंतु ध्यान रहे इस मंत्र को याद करते ही नदी में से चुल्लू भर पानी लेकर उसमे स्नान अत्यंत आवश्यक है। ही ही ही।

!!

काग देवता के असर से सभी कौए भी वापस विशालगढ़ को वापस उड़ गए। तब-

चलो कोचवान! अब जल्दी से रथ को महल की ओर दौड़ाओ। रास्ते में नदी पड़ेगी। वहां रोक लेना। ताकि बांकेलाल चुल्लू भर पानी में नहा सके। ही ही ही।

जबकि मैं इन सभी घटनाओं के पीछे जो उद्देश्य हो सकता है उसके विषय में सोच रहा हूं।

मुझे तो फिक्र हो रही है क्योंकि अपने पुरखों के श्राद्ध की तैयारियां करनी हैं। समय पर उनका श्राद्ध न हुआ तो वो नाराज हो जायेंगे।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

बांकेलाल स्नान के बहाने नदी पर ही उतर गया।

महाराज को मैंने महल भेज दिया है ताकि इस बार कोई दैत्य उन्हें राह में मिले तो मुच्छड़ मेरे कारण बच न पाए। ही ही ही।

बांके ने चुल्लू भर पानी चुल्लू में लिया और उसे अपने ऊपर छिड़क लिया।

वाह! स्नान करके आनन्द आ गया। ही ही ही।

और मी आनन्द आजाएगा। यदि महल पहुंचकर किसी दैत्य द्वारा मोटे के मारे जाने का समाचार मुझे मिले तो। ही ही ही।

लेकिन बांकेलाल महल पहुंचता तभी तो–

अरे! उफ! ये क्या?

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

मैं तो मकड़ी के जालों में फंस गया। बहूहूहू।

ये मकड़ी के जाले मुझ पर किसने फेंके? बहूहूहू।

नैंने! बांके लाल! तेरे कारण मेरे तीन-तीन योद्धा मारे गए। अब मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा। ही ही ही। वुर्ईईई।

अब मैं तुझे काटूंगा। ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

जब मेरे डंक का विष तेरे रक्त में घुल जाएगा तो तू बन जाएगा मकड़ा। ही ही ही।

नहीं!

बांकेलाल! हुण तेरा की होऊ भाप्पे? ही ही ही।

ठहरो राक्षस भाई! मुझे मकड़ा बना कर तुम्हें क्या लाभ होगा?

क्रोध व बदले की आग से जलते मेरे मन को शांति मिल जाएगी। ही ही ही। वुईईई।

जिस उद्देश्य से तुमने तीनों राक्षसों को भेजा था, अगर मैं तुम्हारा वो उद्देश्य पूरा करवा दूं तो?

क्या?

तब तो मैं तुम्हारे प्राण बख्श दूंगा। किंतु पहले मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास आना चाहिए।

आ जाएगा। किंतु पहले तुम मुझे अपना उद्देश्य बताओ।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

तो फिर बांके लाल सुन! मेरा उद्देश्य है पृथ्वी के समस्त राजाओं को मकड़ा बनाना।

मैं चाहता हूं कि पूरी मानव जाति पर मकड़ों का ही राज हो।

किंतु ये काम मैं श्राद्धों में ही पूरा कर सकता हूं। ही ही ही।

किसी भी राजा को मकड़ा बनाना तब मेरे लिए बहुत सरल हो जाता है जब श्राद्ध में उसके पित्र उससे नाराज हों। नाराज पित्र मदद नहीं करते। बल्कि और संकटों को बढ़ावा देते हैं। ही ही ही।

और श्राद्ध तब तक पूर्ण नहीं समझा जाता जब तक कि श्राद्ध की एक एक पूड़ी गाय, कुत्ते और कौओं को न खिला दी जाए। अभी तक तो मैं श्राद्ध में कोई न कोई अड़चन डालता आ रहा था किंतु उसमें श्राद्ध पूर्ण होने का खतरा बना रहता है।

इसलिए इस बार मैंने राज्य की सारी गायों, कुत्तों और कौओं को खत्म करने की ठान ली थी।

किंतु तुम्हारे कारण मेरी ये योजना सफल नहीं हो पाई। अब तुम जल्दी से बताओ कि तुम इस काम में मेरी मदद किस प्रकार करोगे? अन्यथा मैं अभी तुम्हें डंक चुभो कर बनाता हूं मकड़ा। ही ही ही।

वाह! तब तो बन गया काम। क्योंकि विक्रम सिंह मेरा भी शत्रु है।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

मकड़ासुर! कल राजा विक्रमसिंह अपने पुरखों का श्राद्ध करेगा। श्राद्ध के बाद गायों, कुत्तों व कौओं को पूड़ियां खिलाने का काम मैं ही करता हूं।

लेकिन अगर मैं पूड़ियां ही बदल दूं तो क्या होगा?

क्या मतलब?

मतलब ये मकड़ासुर कि मैं गाय की पूड़ी तो खिला दूंगा बकरी को, कुत्ते की पूरी खिला दूंगा सूअर को। और कौए की पूड़ी खिला दूंगा चील को। ही ही ही।

इससे मुच्छड़ का किया श्राद्ध पूरा नहीं हो पाएगा। और उसके पूर्वज उससे क्रोधित हो जाएंगे।

कांव!

यही तो तुम्हारा उद्देश्य है जिसके लिए तुम गायों, कुत्तों और कौओं को मारना चाहते थे।

तब तुम आकर मुच्छड़ मनहूस को डंक चुभोकर बना देना मकड़ा। अब एक मकड़ा तो राज कार्य करेगा नहीं। इस प्रकार उसके मकड़ा बनते ही मैं बनूंगा विशालगढ़ का अगला राजा। और ये मेरा लाभ होगा। ही ही ही।

ओए बांकेया! खुश कीत्ता ई। हीही ही।

इतनी छोटी सी बात पहले मेरी समझ में नहीं आई मगर अब आ गई है। ही ही ही।

पुच्ची

बूहूहूहू! अब तो मुझे जालों से आजाद करो।

कांव!

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

मकड़ासुर बांकेलाल को जालों से स्वतंत्र कराने लगा। किंतु उस शैतान कौए को दोनों में से किसी ने नहीं देखा।

ले बांकेलाल! मैंने जाल काट दिया। ही ही ही।

कांव ही ही ही।

कौआ उड़ता हुआ उस गुफा में समा गया।

कांव

बाल तोड़। तू आगया। चल जल्दी अपने असली वेश में आ।

कौआ बदल गया एक भंयकर राक्षस बाल तोड़ में।

राक्षसराज खाल में मुस को बाल तोड़ का प्रणाम।

क्या समाचार लाया है बाल तोड़? ही ही ही।

बाल तोड़ ने जो समाचार दिया, उसे सुनकर खाल में मुस क्रोधित हो उठा।

नहीं! ये नहीं हो सकता। अगर राजा विक्रम द्वारा किया गया श्राद्ध अपूर्ण रह गया तो मेरी अब तक की सारी मेहनत मिट्टी में मिल जायेगी। गुर्र र्र्र।

क्योंकि मुझे राजाओं द्वारा किए गए श्राद्धों से ताकत मिलती है।

एक हजार एक राजाओं द्वारा किए गए श्राद्धों से ताकत ग्रहण करने और एक हजार एकवें राजा की बलि देने के बाद मेरा भूसा भरा शरीर और दिमाग एक वास्तविक शरीर में बदल जायेंगे। बहू हू हू।

अब केवल एक ही राजा द्वारा किए गए श्राद्ध की ताकत मुझे ग्रहण करनी है। ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

और वो राजा विक्रमसिंह ही है। अगर मकड़ासुर के बहकावे में आकर बांकेलाल ने राजा का श्राद्ध बिगाड़ा तो मेरा भी काम बिगड़ जाएगा।

और अगर मेरा काम बिगड़ा तो मैं मारा जाऊंगा।

...ही ही ही बहूहूहू।

बाल तोड़! तुम्हें तीन मौतों का वरदान प्राप्त है।

तुम तुरन्त विशालगढ़ जाओ और बांकेलाल को समाप्त कर दो ताकि वो श्राद्ध में गड़बड़ न करने पाए। ही ही ही।

जो आदेश राक्षस-राज खबाल में मुस। ही ही ही।

बाल तोड़ कौआ बनकर वापस विशालगढ़ की ओर उड़ गया।

बांकेलाल की गर्दन तो मैं एक ही झटके में तोड़ दूंगा। हुण तेरा की होऊ बांकेलाल। ही ही ही।

महाराज! सभी ब्राह्मण श्राद्ध का भोजन ग्रहण करने पहुंच चुके हैं। केवल आपकी प्रतीक्षा है। ही ही। ही।

बांकेलाल को अपनी ओर बढ़ते संकट का जरा भी आभास नहीं था।

तो फिर तुम चलो। हम आते हैं।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

शीघ्र ही-

महाराज! ये लीजिए! श्राद्ध की पूड़ियां। ब्राह्मणों के साथ ही गायों, कुकरों और कागों को भोजन कराना भी नितान्त आवश्यक होता है, अन्यथा श्राद्ध पूर्ण नहीं समझा जाता। और श्राद्ध का भोजन एवं दान की गई अन्य सामग्री भी पूर्वजों को नहीं मिलती। जिससे वो कुपित हो उठते हैं। हीहीही।

...कृपया कर इन पूड़ियों को गायों, कुकर एवं कागों को खिला देवें!

लाल रंग के वस्त्र से ढकी पूड़िया गाय को यह मंत्र बोल कर खिलावें कि तोता उड़ा, मैना उड़ी। खाले गाय करारी पूड़ी।

काले रंग के वस्त्र से ढकी पूड़ियां यह कह कर कुकरों को खिलावें कि ...

वो तो उड़ा। मैं ना उड़ी। खाले कुकर करारी पूड़ी।

एवं श्रीमान श्वेत वस्त्र से ढकी पूड़ियां यह मंत्र बोलकर कागों को खिला देवें मैं तो उड़ा, वो भी उड़ी, खाले कागा करारी पूड़ी। उसके बाद हीहीही करके दांत फाड़ कर हंसने से पूर्वज बहुत प्रसन्न होते हैं। हीहीही।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

राजा विक्रमसिंह ने पूड़ियों के भरे थाल बांकेलाल को थमा दिये।

यह लो बांकेलाल! यह कार्य हमेशा की तरह तुम्हें ही करना है। ही ही ही।

अवश्य महाराज...

... मनहूस! मुच्छड़! मोटे। इस बार तू मकड़ा बनने से नहीं बच सकता। ही ही ही।

बांकेलाल के चेहरे पर मक्कारों वाली हंसी क्यों दिखाई पड़ रही है?

बेटे सेनापति! इस हंसी के पीछे अवश्य ही कोई गहरा रहस्य है।

मुझे बांकेलाल का पीछा करना चाहिए। ही ही ही।

बांकेलाल को दिखाई दी गाय।

बांबां ओह, राजसी पूड़ियों की सुगंध यहां तक आ रही है। बांकेलाल पूड़ियां हमें ही खिलाने ला रहा है। ही ही ही।

ये क्या? बांकेलाल हमें पूड़ियां खिलाए बिना ही आगे बढ़ गया। गुर्रर्र।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

बांकेलाल ने गाय वाली पूड़ियां गायों को खिलाई क्यों नहीं ?

आज नगर की सारी बकरियां कहां मर गई ? हीहीहीही।

ओह ! यह रही बकरी । हीहीही।

में सेंऽऽऽये स्वादिष्ट पूड़ियों की खुशबू कहां से आ रही है। किंतु मेरी किस्मत में पूड़ियां नहीं घास लिखी है। बहूहूहू।

मगर आज बांकेलाल ने बदल दी थी बकरी की किस्मत।

लेबकरी पूड़ी। हीहीही।

में सेंऽऽ। अवश्य ही मैंने पूर्व जन्म में कोई पुण्य किया था जो बकरी जन्म में मुझे पूड़ियां खाने को मिल रही हैं। में सेऽऽऽ हीहीही।

??

ये बांकेलाल कैसा अनर्थ कर रहा है।

गायों की पूड़ियां इसने बकरी को क्यों खिला दीं ?

एक पूड़ी और लो न प्यारी बकरी हीहीही।

में सेंऽऽऽ नहीं बांकेलाल ! पेट भर गया। डकार हीहीही। मेरा बकरा...

... होता तो एक पूड़ी वो भी खा लेता।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

बांकेलाल ने शेष बची पूड़ियों में से कुकरों वाली पूड़ियां खिला दीं सूअर को।

हुड़क-हुड़क (ह्वी: कितनी गन्दी चीज खिला रहा है।)

खाओ! खाओ! ही ही ही खूब पेट भरकर खाओ! अरे, खाता क्यों नहीं?

(हुड़क-हुड़क) (पहले इन्हें कूड़े पर फेंक दो ताकि ये स्वादिष्ट हो जाएं, तब मैं पूड़ियां खाऊंगा।)

अरे! इसने पूड़ियों को कूड़े के ढेर पर गिरा कर गन्दा कर दिया।

ओह, अब समझा। सूअर को कूड़े पर गिरी पड़ी वस्तुएं ही पसंद आती हैं। ही ही ही।

बांकेलाल घोर अनर्थ कर रहा है। ये तो कुकरों की पूड़ियां हैं, जो ये सूअर को खिला रहा है।

आखिर में बची कावा की पूड़िया उसने खिला दीं वहीं मंडराती चीलों को।

चीं चीं चीं आज मेरे दादा जी का श्राद्ध है। आज मांसाहार के स्थान पर पूड़ी खाऊंगी। ही ही ही।

चीं चीं

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

कौए की पूड़ी चीलों को खिलाकर तो बांकेलाल ने साशी हदें ही पार कर दीं। गुर्रर्र्र ही ही ही।

अब मैं यहां और नहीं रुक सकता। मुझे तुरन्त महाराज को ये सूचना देनी चाहिए। आज बांकेलाल की खैर नहीं। गुर्रर्र्र ही ही ही।

इधर बांकेलाल तो बेहद प्रसन्न था।

चल बेटा बांकेलाल! तेरा काम तो हो गया पूरा। ही ही ही।

किंतु! न तो वहां से सेनापति जा सका।

और न ही बांकेलाल।

अरे बाप रे!

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

सामने था बालतोड़ –

ही ही ही ! बांकेलाल ! तू बालतोड़ के हाथों नहीं बचेगा।

अरे ! कौआ राक्षस में बदल गया।

मगर मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है ? बहूहूहू।

ये राक्षस बांकेलाल का नाम कैसे जानता है।

बालतोड़ के हाथ में दिखाई दी एक चिमटी।

ये मैं तुझे तेरी आखिरी सांस निकलते समय बताऊंगा।

अब मैं इस चिमटी से एक-एक करके तोड़ूंगा तेरे बाल।

तेरे सिर से तीन बाल तोड़ते ही तेरा दम निकल जाएगा। ही ही ही।

आहह !

बेटा बांके ! अगर इसने तीन बाल तोड़ लिए तो उधर मुच्छड़ का और इधर तेरा काम-तमाम हो जाएगा लेकिन इससे बचने के लिए मैं क्या करूं, कुछ तो करना ही पड़ेगा।

संजय झन्न

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

बाल तोड़ ने थाल को पकड़ कर कपड़े की तरह फाड़ दिया।

ही ही ही! तेरा भी यही हाल करुंगा बांकेलाल!

चड़ड़ड़

अब मैं तोड़ूंगा तेरा दूसरा बाल। ही ही ही।

बांके! जल्दी कुछ कर। तू इससे बचकर भाग भी नहीं सकता। क्योंकि ये कौआ बनकर उड़ेगा और तुझे झट से पकड़कर तोड़ लेगा तेरे बाकी के भी दो बाल। बहूहूहू।

लेकिन इससे पहले कि बालतोड़ बांके का बाल तोड़ लेता।

ओह! याद आया। बांके बेटा। तेरे पास तो गांबां, मौं मौं काटी, और काग शक्तियां हैं। ही ही ही।

अब वक्त आ गया है इन शक्तियों का प्रयोग करने का। ही ही ही।

सबसे पहले मैं प्रयोग करूंगा गांबा शक्ति का। हीहीही।

उसके लिए मुझे गरु मंत्र बोलना होगा।

आयं! ये तो मौत को सिर पर देखकर भी प्रसन्न हो रहा है।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

बांकेलाल ने तुरन्त गऊ मंत्र पढ़ा। दूसरे ही पल सेनापति ने देखा वो अद्भुत नजारा।

बांsssss

अरे! इसके तो सींग निकल आए। गाय जैसी पूंछ भी।

बांकेलाल ने आव देखा, न ताव, बाल तोड़ को जड़ी एक ठोकर।

दुष्ट! पीछे हट।

आह!

तड़ाक

अब तू मेरे बाल नहीं तोड़ पाएगा बलिक मैं खींचूंगा तेरी खाल। हीहीही।

बांकेलाल ने अपनी पूंछ को कोड़े की तरह फटकारा—

सड़ाक

आह, मरा!

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

अभी मरा कहां है बाल तोड़! मरेगा तो अब। हीहीही।

आऽऽऽह!

मेरी मृत्यु गाय के खुर, पूंछ और सींगों के प्रहार से ही होनी थी।

बूहूहूहू

आज अगर ये शक्ति मेरे पास न होती तो बाल तोड़ मेरे तीन बाल तोड़कर मुझे मार डालता। हीहीही।

बाल तोड़ के मरते ही बांकेलाल को मिली गांबा चक्रित भी वापस लौट गई।

ओह! मैं पुनः पहले जैसा हो गया। हीहीही।

अरे! इसने तो बालतोड़ को मार दिया। इसके पास ऐसी विचित्र शक्ति कहां से आई? बूहूहूहू।

आह! मुझे लात किसने मारी?

तड़ाक

मैंने!

स्वच्च

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

तू क्या समझ रहा था कि मैं मर गया।

ही ही ही। मैं तुझे मारे बिना नहीं मरूंगा। देख। मैंने तेरा एक बाल और तोड़ लिया। पर अब मुझे फिर से तीन बाल तोड़ने होंगे।

ये... ये तो कम्बख्त अभी जीवित है। अब तो गांबां शक्ति भी दोबारा मुझे नहीं मिलेगी क्योंकि वो किसी भी संकट से मेरी केवल एक बार ही मदद कर सकती थी। बहूहूहू।

तो क्या हुआ? अभी मेरे पास भौं भौं काटी शक्ति है।

उसके लिए मुझे बोलना होगा कुकुर मुत्ता मंत्र।

फिर राक्षस बाल तोड़ जैसे ही उसका दूसरा बाल तोड़ने के लिए आगे बढ़ा।

बांके लाल ने तुरन्त कुकुरमुत्ता मंत्र पढ़ा।

चढ़ी जवानी आकरव मस्तानी ऽऽ हो गई मुटियार दी ऽऽ पूंछ टेढ़ी थी, अब सीधी हो गई खूंखार की। ही ही ही।

अरे! मेरे मुंह से भौंकने के स्वर निकल रहे हैं। मुझमें कुत्ते के गुण आ गए हैं। मुझे अपना जबड़ा कुत्ते के जबड़े की तरह मजबूत हो गया लग रहा है।

भौं भौं

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

और अब इस जबड़े से मैं तोड़ डालूंगा तेरी सारी हड्डियां।

आह!

सेनापति आंखें फाड़े वह नजारा देख रहा था।

अगर मैं बांकेलाल की मदद करने गया तो उसे पता लग जाएगा कि मैं उसका पीछा कर रहा था। ही ही ही। इसलिए मुझे छुपकर ही ये तमाशा देखना चाहिए।

इधर बांकेलाल ने कुत्ते की तरह उछलकर दबोच ली बालतोड़ की गर्दन–

भों भों

खच्चाक

आह! मर गया मैं तो। ही ही ही। बहूहूहूहू!

गर्दन की हड्डी कड़ाक से टूटते ही–

वो मारा। ये तो हो गया ढेर। ही ही ही।

धम्म

मेरी मृत्यु कुत्ते के जबड़े द्वारा मेरी गर्दन तोड़े जाने से ही होनी थी।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

राक्षस बालताड़ के ढेर होते ही बांकेलाल को मिली मौं मौं काटी शक्ति भी तुरन्त वापस लौट गई।

अगर मुझे ये शक्तियां न मिली हुई होतीं तो आज मेरा बचना कठिन था। अब जल्दी से महल लौटना चाहिए। ही ही ही।

तेरा बचना तो अब भी कठिन है बांकेलाल बच्चू! अब मैं तेरी पोल-पट्टी महाराज के सामने खोलूंगा। ही ही ही।

किंतु अभी बांकेलाल ने एक कदम ही आगे बढ़ाया था कि-

चला कहां बांकेलाल?

आह!

अरे! ये तो फिर उठ खड़ा हुआ।

ही ही ही। तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता बांकेलाल। किंतु मुझे फिर से तीन बाल ही तोड़ने होंगे। और इस बार तो मैं तेरे तीन...

... बाल तोड़ कर ही दम लूंगा।

इससे बचने के लिए अब मुझे अपनी आखिरी शक्ति 'काम शक्ति' का भी प्रयोग करने के लिए बोलना होगा...

कूकी मंत्र। सफाई करे झाड़ू। हम खाएं आड़ू। भाड़ भौंके भाड़ू। हम खाएं आड़ू

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

फिर इससे पहले कि बालतोड़ उसका दूसरा बालतोड़ पाता।

ठोंग

आह!

बांके की कौआ ठोंग के प्रहार से चीखकर बालतोड़ भूमि पर गिर पड़ा।

आह! बांकेलाल! तू जीता मैं हारा। मुझे राक्षसराज रुद्राल ने तुझे मारने भेजा था। तू हैरान होगा कि मैं बार-बार जीवित कैसे हो जाता था। मुझे तीन मृत्यु वरदान प्राप्त थे। मेरी तीसरी और अंतिम मृत्यु कौए की ठोंग लगने से ही होनी थी। बूहूहूहू

अब तू आराम से घर जा। क्योंकि अब चौथी बार मैं जीवित नहीं होऊंगा। बूहूहूहू।

वो मारा।

तभी तो मैं सोच रहा था कि देवताओं की दी शक्तियां बिना संकट से मेरी मदद किए वापस कैसे लौट गईं। अब पता चला कि बालतोड़ उन शक्तियों के कारण ही तीन बार मरा है। ही ही ही।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

इधर सेनापति तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ जा पहुंचा राजमहल। फिर जैसे ही सेनापति ने पूरी बात बताई-

अनर्थ हो गया। ये श्राद्ध निष्फल हो गया।

महाराज को अपने पूर्वजों का कोपभाजन बनना पड़ेगा। ही ही ही!

अबार ये सच है तो बांकेलाल को कठोर दण्ड मिलेगा वुईईई।

??

महाराज! बांकेलाल आ गया।

बांकेलाल की तो जैसे सिट्टी पिट्टी ही गुम हो गई थी।

ओह! तो सेनापति मेरा पीछा कर रहा था।

लेकिन बांकेलाल! अब तेरा क्या होगा? तू इन्हें कैसे समझाएगा कि तूने गाय की पूड़ी गाय को, कुत्ते की कुत्ते को और कौए की कौए को

क्यों नहीं खिलाई। बहहूहू।

बांकेलाल! सेनापति के लगाए आरोप का तुम्हारे पास क्या जवाब है? जल्दी जवाब दो अन्यथा मृत्युदण्ड भुगतने को तैयार हो जाओ।

व... वो म... मैं महाराज!

तभी- ही ही ही! बांकेलाल मैं तुमसे प्रसन्न हुआ। तुमने अपने वायदे के अनुसार राजा विक्रम के पूर्वजों का श्राद्ध खराब कर दिया। ही ही ही।

मकड़ासुर!

मकड़ासुर?

श्राद्ध खराब होने की सूरत में ही मैं तुम्हारे राजा को डंक मारकर मकड़ा बना सकता था।

अब मैं इसे मकड़ा बनाऊंगा। ही ही ही।

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

सैनिकों। खत्म कर दो इसे।

मुझे केवल श्राद्ध से प्रसन्न हुए पूर्वज खत्म कर सकते हैं। मगर तुम्हारा श्राद्ध तो मैंने खराब करवा दिया। ही ही ही।

अब मुझे कोई नहीं मार सकता। ही ही ही।

अरे! ये राक्षस तो हमें मकड़ी के जालों में फंसा रहा है।

ही ही ही। मुझे कोई नहीं रोक सकता। मैं राजा विक्रमसिंह को डंक मारकर बना दूंगा मकड़ा। ही ही ही।

बांकेलाल दुष्ट! मैं नहीं जानता था कि मैंने आस्तीन में सांप पाल रखा है।

लेकिन इससे पहले कि मकड़ासुर अपना डंक राजा विक्रमसिंह को चुभो देता।

आह! मेरा डंक उखाड़ दिया। बहूहूहू।

ठहर जा दुष्ट! पापी!

आह! कौन है जो मुझे मार रहा है?

मारो! मारो! इस कम्बख्त को।

!!

थोड़ी ही देर में उस अदृश्य शक्ति ने मकड़ासुर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

आह! बहूहूहू।

हुण तेरा की होऊ मकड़ासुर?

मकड़ासुर के प्राण परवेरू उड़ गए।

ARJUN & MOHIT

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

विक्रमसिंह की हैरानी भी बढ़ी हुई थी।

हे अदृश्य शक्ति! कृपया दर्शन दो और बताओ कि आप कौन हैं? ही ही ही।

पुत्र विक्रमसिंह! हम तेरे पूर्वज हैं। हम तेरे श्राद्ध से बहुत प्रसन्न हैं। इसलिए जब हमने तुझे संकट में देखा तो तेरी मदद को चले आए। हीही ही।

किंतु दुष्ट बांकेलाल के कारण श्राद्ध तो अपवित्र हो गया था। उसने गाय की पूड़ी बकरी को, कुत्ते की सूअर को और कौए की चील को खिला दी थी। उसके बाद भी क्या आप मुझसे प्रसन्न हैं?

इसलिए ही तो प्रसन्न हैं पुत्र...

...क्योंकि स्वर्ग का भोजन इतना स्वादिष्ट होता है कि हम हमेशा अधिक खा जाते हैं। हमें ध्यान ही नहीं रहा कि आज श्राद्ध भी है और श्राद्ध का भोजन भी हमें मिलेगा।

हम हमेशा की तरह स्वर्ग का भोजन अधिक मात्रा में खा गए थे जिससे हमें बदहजमी हो गई थी। अगर तुम्हारे श्राद्ध का भोजन भी हमें मिल जाता तो हमारी तो खैर ही नहीं थी...

... इस बार श्राद्ध का भोजन खाकर हम कुपित हो जाते। शायद हम तुझे मकड़ासुर से बचाने भी न आते। किंतु अब हम प्रसन्न हैं। हीही ही। अच्छा हम चलते हैं सदा सुखी रहो।

तभी- अरे! एक और राक्षस आ गया।

आह!

BUY COMICS

SAVE COMICS INDUSTRY

हां! मुझे राक्षसराज स्वाल में मुस कहते हैं। बांकेलाल! बालतोड़ को मैंने ही तुम्हें मारने भेजा था क्योंकि तुम श्राद्ध को बिगाड़ कर मेरा खेल बिगाड़ रहे थे। दरअसल श्राद्ध सम्पन्न होते ही मुझे ताकत मिलती फिर एक हजार एकवें राजा यानी विक्रम सिंह की बलि देते ही मैं अमर हो जाता। ही ही ही।

बांकेलाल! तुम्हारे कारण श्राद्ध सम्पन्न नहीं हुआ और ऐसा होते ही एक शाप के कारण अब मेरी मृत्यु हो जाएगी किंतु मृत्यु से पूर्व तुम्हें ये सारी बातें बताना जरूरी था। अन्यथा मेरी आत्मा अंधे कुएं में जा लटकती। तो फिर अप्पां चलदे हैंवे आं। आह!

ओह! तो बांकेलाल तुम ने इसलिए श्राद्ध पूर्ण नहीं होने दिया।

जी हां महाराज! मुझे आपको मकड़ासुर से भी बचाना था और राक्षसराज स्वाल में मुस से भी। ही ही ही।

जान बचाने के लिए ये झूठ तो बोलना ही पड़ेगा बहूहूहू।

और मैंने इस नामुराद सेनापति की बातों में आकर तुम्हें बुरा-भला कहा। सेनापति! तुम्हारी यही सजा है कि तुम दो दिनों तक इसी तरह जाले में फंसे रहो। ही ही ही।

बहूहूहू!

बेड़ावार्क। कम्बख्त राक्षसराज को भी श्राद्धों में ही आना था विक्रमसिंह को खत्म करने। हायरी मेरी फूटी किस्मत बहूहूहू। हीहीही।

और फिर-

मेरे प्यारे बांकेलाल! दे पुच्ची। ही ही ही।

समाप्त

ARJUN & MOHIT